The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 2 | July-September 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

मीडिया का भारतीय लोकतंत्र में योगदान

पूनम ज्ञान चंदानी
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर छत्तीसगढ़

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Article History
Received : September 13, 2023
Accepted : September 30, 2023

Keywords :
भारत में मीडिया का इतिहास, प्रिंट मीडिया से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में परिवर्तन, भारतीय मीडिया की विशेषताएं, सरकार द्वारा मीडिया को मजबूत करने की भूमिका, वर्तमान लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका और वर्तमान समय में मीडिया को प्रभावित करने वाले मुख्य मुद्दे

ABSTRACT

इस शोध पत्र में भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका का राजनीतिक विश्लेषण किया गया है। एक वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। समाचार और विचारों को प्रसारित करने के लिए आजकल मीडिया शब्द कठोर हो गया है। लोकतंत्र में मीडिया को विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ चौथा स्तंभ माना जाता है। पूरी दुनिया में लोकतंत्र का निर्माण मीडिया ने किया है। वर्तमान युग में भारतीय मीडिया ने अखबार और रेडियो से लेकर टेलीविजन और सोशल मीडिया तक बहुत कुछ देखा है।क्योंकि बड़ी कंपनियों, व्यवसायों, राजनीतिक कुलीनों और उद्योगपतियों ने मीडिया घरानों में निवेश करके अपनी ब्रांड छवि को सुधार लिया। अंतरराष्ट्रीय दर्शकों द्वारा बार-बार सनसनी फैलाने वाली खबरों की आलोचना करने से भारतीय मीडिया की विश्वसनीयता तेजी से गिर रही है। लोकतंत्र और सार्वजनिक सुरक्षा पर उसकी भूमिका संदेह के घेरे में है और लोगों का उस पर भरोसा घट रहा है।और सार्वजनिक सुरक्षा और लोकतंत्र की जांच में उसकी भूमिका पर संदेह है। दुनिया में तेजी से विकसित होने वाली प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया में आज के युवा अधिक उत्साहित हैं। इसलिए, मीडिया को यह सुनिश्चित करना होगा कि टीआरपी चैनलों को बढ़ावा देने के लिए प्रसारित की जा रही सूचना को पक्षपाती या हेरफेर नहीं किया जाए।

परिचय :

एक वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। समाचार और विचारों को प्रसारित करने के लिए आजकल मीडिया शब्द कठोर हो गया है। लोकतंत्र में मीडिया को विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ चौथा स्तंभ माना जाता है। विधायिका और कार्यपालिका दोनों की जनता खुलकर आलोचना करती है। न्यायपालिका की आलोचना करते समय शब्द का उपयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए, क्योंकि यह मानहानि के

मुकदमे की आशंका पैदा करता है। इसलिए, उद्योगपति, प्रशासनिक अधिकारी या सार्वजनिक क्षेत्र के नेता जो परीक्षण के अधीन हैं, हमेशा कहते हैं कि वे भारत के न्यायालय पर भरोसा करते हैं। किंतु जब अदालत ने विपरीत निर्णय लिया है, तो उसके मन को समझने में बहुत कम समय लगता है। लेकिन यह धार्मिक पुस्तक की तरह अक्सर मीडिया की आलोचना से बचता है। मीडिया का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है; लोकतंत्र और सार्वजनिक सुरक्षा पर उसकी भूमिका संदेह के घेरे में है और लोगों का उस पर भरोसा घट रहा है।

पूरी दुनिया में लोकतंत्र का निर्माण मीडिया ने किया है। मीडिया ने 18 वीं शताब्दी से, विशेष रूप से अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन और फ्रांसीसी क्रांति के दौरान, जनता तक पहुंचने और उन्हें ज्ञान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोकतांत्रिक देशों में मीडिया को " चौथा स्तंभ" कहा जाता है जो विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को नियंत्रित करता है। क्योंकि लोकतंत्र के बिना स्वतंत्र मीडिया असम्भव है। क्योंकि वे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की निरंकुशता को जानते थे, मीडिया उनके लिए सूचना का एक स्रोत बन गया था। लाखों लोगों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई में नेतृत्व किया, जिससे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई शक्ति मिली। 1975 में 2014 के लोकसभा चुनावों में प्रेस सेंसरशिप के दिनों से भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका में बहुत बदलाव देखा गया है।

लक्ष्य:-

1 भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

2. भारतीय राजनीति में मीडिया का विकास बताया गया है।

3. मीडिया का भारतीय लोकतंत्र पर असर बताया गया है।

परियोजना:-

1 मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

2. मीडिया का भारतीय राजनीति पर प्रभाव बढ़ा है।

अध्ययन और आकड़ों का संकलन:

इस प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक अध्ययन विधि का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में राजनीतिक दृष्टिकोण लिया गया है। अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक आकड़ो को शामिल करता है। प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से मूल्यांकन किया गया है। द्वितीयक आँकड़ो को डायरी, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और कई वेबसाइटों और पुस्तकों से संकलित किया गया है। इस अध्ययन की शैली वर्णनात्मक है।

भारत में मीडिया का इतिहास:

भारत में समाचार प्रकाशन का इतिहास मुद्रण की खोज से शुरू होता है। यह अंग्रेजी काल था, इसलिए पत्रिकाओं का उद्देश्य उस समय की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना था। यही कारण था कि उस समय सैकड़ों पत्रकारों ने काम किया, जो अपनी जान और जेल का खतरा था। कुछ पत्र गुप्त रूप से छपे थे, जबकि कुछ खुले तौर पर छपे थे। कई पत्र विदेशों में छपे और भारत भी शामिल था। वे कभी-कभी एक से दो पृष्ठों की शीट की तरह दिखते थे। जिसे भी ये पत्रिकाएं मिलीं, उस पर मुकदमा चला और वह कई साल जेल में रहा। तब भी वे छापते और वितरित करते रहे। फिर भी स्वतंत्रता–सार्वजनिक सुरक्षा के परीक्षण से अधिकांश पूर्ववर्ती मीडिया व्यवस्था का सामना हुआ था। 1947 के बाद देश के वातावरण में गिरावट ने मीडिया को भी प्रभावित किया। नेहरू बहुत अंग्रेजी और कुलीन थे। उन्हें भारतीय भाषाओं से घृणा थी। अंग्रेजों ने अंग्रेजी पत्रों को राष्ट्रीय (छाँजपवादन) और भारतीय पत्रों को भाषाई (तमातबांदसंत) कहा। नेहरू ने उसी नीति का पालन किया। सरकारी विज्ञापनों को ऐसे पत्र मिलने लगे। इसलिए अंग्रेजी पत्र बहुत बढ़ गए।

दुर्भाग्य से आज भी वही स्थिति है। 80 प्रतिशत सरकारी विज्ञापन केवल अंग्रेजी पत्रों में मिलते हैं। लेकिन जमीनी खबरों में वे अक्सर नहीं होते हैं। 1947 जैसा ही आज भी है। लोग अपनी गाँव और जिले की खबरों के लिए केवल अपनी भाषा में आने वाले पत्रों पर निर्भर करते हैं। यद्यपि बौद्धिक और सरकारी प्रशासन में शिक्षित होने के कारण अंग्रेजी पत्रों का अधिक प्रभाव हैलेकिन प्रसार में वे भारतीय कागजों से बहुत पीछे हैं। इसका अर्थ है कि अंग्रेजी पत्र भारत के शिक्षित, संपन्न और संपन्न वर्ग की मानसिक भूख को शांत कर सकता है; लेकिन जनपक्ष केवल भारतीय अक्षरों से पूरा होता है। 26 जून, 1975 को, इंदिरा गांधी ने देश में तानाशाही की शुरुआत की और सभी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को नियंत्रण के लिए बंद कर दिया। कई पत्रों ने अपनी शैली में इसका विरोध किया ; लेकिन यह संघर्ष लंबे समय तक नहीं चला। यह शर्म की बात है कि बड़े पत्रों के संपादकों ने जुलूस निकाला और इसका समर्थन किया। उस समय, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने गुप्त रूप से 500 से 1,000 आंदोलन चलाए।ये पत्र अंगारा, सौगंध, स्वतंत्रता जैसे शब्दों से एक शहर या जिले तक सीमित थे। ये एक हाथ से बनाए गए साइक्लोस्टाइल मशीन पर छापते थे, लेकिन कुछ साहसी प्रेस मालिकों ने रात में बड़ी मशीनों पर भी छाप दी। उस समय भी, बड़े पत्रों की जगह इन स्थानीय पत्रों ने जनपक्ष को पूरा किया। आपातकाल खत्म होने के बाद पत्रों को स्वतंत्रता मिली। तब एक कांग्रेसी नेता ने कहा कि हमने उन्हें बस झुकने के लिए कहा था, लेकिन वे लेट गए और पूजा करने लगे।बड़े पत्रों में इतनी स्पिनिटी नहीं थी क्योंकि सभी बड़े पत्र पूंजीपति वर्ग के थे और पूंजीपति कभी भी सरकार का विरोध नहीं कर सकते थे। आज भी परिस्थिति वैसी ही है। महान अंग्रेजी या भारतीय पत्रिकाओं के मालिक अभी भी बड़े व्यापारी हैं। उनका मुख्य कार्य कुछ अलग है। पत्र अपने व्यवसाय के लिए मीडिया शील्ड प्रदान करते हैं।

प्रिंट मीडिया का बदलाव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में:

वर्तमान युग में भारतीय मीडिया ने अखबार और रेडियो से लेकर टेलीविजन और सोशल मीडिया तक बहुत कुछ देखा है। 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था का उदारीकरण हुआ, क्योंकि बड़ी कंपनियों, व्यवसायों, राजनीतिक कुलीनों और उद्योगपतियों ने मीडिया घरानों में निवेश करके अपनी ब्रांड छवि को सुधार लिया। समाचार चैनल वर्तमान शो व्यवसाय में शामिल होने से टीआरपी समाचार घरों में प्रतिस्पर्धा हुई। समाचार पत्र, जो लोगों को मुद्दों की जानकारी देने के लिए पढ़ते थे, अब पक्षपातपूर्ण विचारों का स्रोत बन गए हैं। मीडिया का काम लोगों को लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना है और लोकतंत्र की तीन संस्थाओं का विरोध करना है। लाखों लोगों की आवाज को मीडिया मिलकर उठाता है जब सरकारी संस्थान भ्रष्ट और निरंकुश हो जाते हैं या जब वे समाज से जुड़े मुद्दों पर ध्यान देते हैं। आज के भारत में, कई राजनीतिक दल और व्यावसायिक समूह मीडिया को अपना मुख्य माध्यम मानते हैं। वे इस तरह के महत्वपूर्ण आंकड़ों के लिए लिपिकार के रूप में काम करते रहे हैं क्योंकि उनका व्यवसाय ऐसे संगठनों का समर्थन करता है।

भारत में मीडिया की कुछ विशेषताएं हैं:

अंतरराष्ट्रीय दर्शकों द्वारा बार-बार सनसनी फैलाने वाली खबरों की आलोचना करने से भारतीय मीडिया की विश्वसनीयता तेजी से गिर रही है। भारतीय मीडिया ने कारगिल युद्ध (1999) और 26/11 बॉम्बे (मुंबई) आतंकवादी हमलों को कवरेज करने में साहसिक तरीके अपनाए हैं। राजनीतिक दलों के बढ़ते प्रभाव से दर्शकों तक पहुँचने वाली खबरों की गुणवत्ता में निश्चित रूप से कमी आई है क्योंकि मीडिया ने सरकारी कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए पार्टियों के लिए एक मंच के रूप में काम किया है।

मीडिया को मजबूत करने में सरकार की भूमिका:

भारत जैसे लोकतंत्र को स्वतंत्र और नियंत्रित प्रेस की जरूरत है। जब से हमारे संविधान निर्माताओं ने भारत का संविधान बनाया है, मीडिया की भूमिका भारत सरकार के दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण हो गई है। भारत में संविधान की स्थापना के दौरान, प्रेस की स्वतंत्रता, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार से अलग थी, जैसा कि अमेरिकी संविधान में है। तैयार करना था। डॉ. अंबेडकर, संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष, ने सोचा कि स्वतंत्र प्रेस को अलग से कानून बनाने की जरूरत नहीं है, लेकिन उन्होंने कहा कि "प्रेस किसी व्यक्ति या नागरिक का वर्णन करने के लिए अनुच्छेद 19 (1) (A) के तहत बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार प्रेस का अधिकार बन गया। हाल ही में बॉर्डर्स के साथ रिपोर्टर्स ने वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में 180 देशों में से भारत को 136

वाँ स्थान दिया। देश में पत्रकारों की स्वतंत्रता का स्तर भारत की रैंकिंग में गिरावट बढ़ते "हिंदू राष्ट्रवादियों" से जुड़ी है, जो राष्ट्रीय मीडिया में "राष्ट्र-विरोधी" विचारों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं, जो मीडिया को नकारात्मक रूप से प्रदर्शित करते हैं।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में मीडिया की भूमिका पर व्यापक कानून बनाना मुश्किल है, जैसा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था। सरकारी संस्था न्यूज़ ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन (NBCA) ने दर्शकों को सूचना देने के तरीके निर्धारित किए हैं। निष्पक्षता और निष्पक्षता के साथ जनता को विश्वसनीय समाचार देने पर दिशानिर्देशों का ध्यान केंद्रित है।

वर्तमान भारतीय लोकतंत्र में मीडिया का स्थान:

मीडिया लोकतंत्र की "चैथी संपत्ति" है, क्योंकि यह न्याय और सरकारी नीतियों का लाभ समाज के आंतरिक वर्गों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण है। मीडिया दर्शकों पर भी प्रभाव डालता है, इसलिए लोगों को मीडिया पर विश्वास है। भारतीय राजनीति में हो रहे बदलावों ने मीडिया से अधिक उम्मीदें बढ़ा दी हैं क्योंकि व्यक्तिगत विचारों को परिवर्तन के इस चरण में विश्वास करना आसान हो गया है। पुरानी पीढ़ी अभी भी देश की परंपरा और संस्कृति पर निर्भर करती है, जबकि वर्तमान युवा पीढ़ी को दुनिया में तेजी से बढ़ती प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया में रुचि है। इसलिए, मीडिया को यह सुनिश्चित करना होगा कि टीआरपी चैनलों को बढ़ावा देने के लिए प्रसारित की जा रही सूचना को पक्षपाती या हेरफेर नहीं किया जाए।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है, क्योंकि यह चार अलग-अलग काम करता है:

लोगों को आवश्यक जानकारी देता है ताकि वे सूचित निर्णय ले सकें।

मीडिया बहस, बहस और मतदान के माध्यम से सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह बनाता है।

यह लोगों को लोकतंत्र के बारे में बताता है और जनता की राय और सुझावों के माध्यम से लोकतांत्रिक मांगों को बनाकर सार्वजनिक नीति के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान देता है।

यह लोकतांत्रिक संस्थानों में भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग, मानव अधिकारों के उल्लंघन और न्याय प्रणाली की कमियों को दिखाता है।

राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों को उठाकर मीडिया एकता और भाईचारा बनाने में मदद करता है और देश की विविधता को रेखांकित करता है।

भारतीय मीडिया बहुत पुराना है और ऐतिहासिक रूप से निरंकुशता (जैसे राष्ट्रीय आपातकाल) से लोकतंत्र को बचाया है।

वर्तमान मीडिया स्थिति :

वर्तमान पत्रों की तरह, मीडिया बाजार के चंगुल में है। अस्सी के दशक में राजीव गांधी और उनकी दून मण्डली की सरकार आने पर देश में अंग्रेजी प्रभुत्व बढ़ने लगा। हिंदी भाषी स्कूलों ने भी धीरे-धीरे अपने बोर्डों को अंग्रेजी में लिखने के लिए बदल दिया। 25 साल बीत गए हैं और आज एक पीढ़ी आई है जो न तो हिंदी बोलती है न अंग्रेजी बोलती है। हिंदी अंकावली लगभग पूरी तरह से गायब हो गई है।

इस पीढ़ी तक पहुंचने के लिए, कई हिंदी पत्रों ने अंग्रेजी शब्दों और रोमन लिपि में अपनी भाषा में घुसपैठ की है। बहुत से पत्र अंग्रेजी में शीर्षक रखते हैं। एक समय था जब लोग इन पत्रों को पढ़कर अपनी भाषा को बेहतर बनाते थे; लेकिन अब वही मीडिया भाषा को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है। दूरदर्शन के समाचारों और नीचे दिए गए पाठ में हिंदी के दुव्र्यवहार को देखकर उसके मन में एक इच्छा जागी। यह स्पष्ट है कि मीडिया का लक्ष्य सिर्फ पैसा कमाना है।

पत्रिकाएं लेखकों और साहित्यकारों को पहचान देती हैं। नए और युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने की पहले कई पत्रों ने कोशिश की; लेकिन आज अधिकांश पत्र एक गुट से जुड़े हैं। वे उस समूह के ही लेखकों को रखते हैं। विरोधी या तटस्थ लेखकों की अच्छी रचनाएँ भी फेंक दी जाती हैं। यहाँ तक कि जवाब नहीं मिलता। बहुत से पत्र अंग्रेजी लेखकों की अनुवाद सेवा में भाग ले रहे हैं। वे भूल जाते

हैं कि हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में लिखने वाले लोग बहुत हैं; लेकिन जब लक्ष्य सिर्फ पैसा है, तो हम उस पर कैसे ध्यान दे सकते हैं?

इस मानसिकता के कारण लोग संस्थानों के कार्यक्रमों से दूर होने लगे हैं। 27 फरवरी को दिल्ली के रामलीला मैदान में बाबा रामदेव और अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं को सुनने के लिए एक लाख लोग आए। सरकारी टीवी ने इसे दूसरे-तीसरे पृष्ठ पर भी छापा. दिल्ली के अधिकांश पत्रों ने भी इसे छापा। यह विज्ञापन से लालची मीडिया के डर का एक उदाहरण है।

इस बाजारवाद ने पेड न्यूज़ को बढ़ावा दिया है यह प्रवृत्ति चुनाव के समय बढ़ जाती है। 100 लोगों की एक सभा को एक बड़ी सभा कहना और एक बड़ी सभा की खबर गायब करना इस दुर्भावना का एक हिस्सा है। दुर्भाग्य से, इस प्रतियोगिता में केवल वे अखबार भाग ले रहे हैं, जिनके मालिकों के पास बड़ी संपत्ति है। इसकी नकल भी उनके लापरवाह छोटे अक्षरों से होती है। यह अच्छा संकेत है कि कुछ पत्रकारों और संगठनों ने इसके खिलाफ आवाज उठाई है।

मीडिया में राय और समाचार अलग-अलग विचार हैं। संपादकीय पृष्ठ में रिपोर्टर या संपादक समाचारों पर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। कुछ पत्र इस नीति का पालन करते हैं; लेकिन अधिकांश में इसकी कमी है। रिपोर्टर अपने विचारों के अनुसार समाचार को ट्विस्ट करता है। इससे पत्र की विश्वसनीयता कम हो जाती है।

मीडिया पर भी समाज में नीचे की ओर रुझान का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। सरकार अखबारों को पूरा विज्ञापन देती है। इस लालच में हजारों रजिस्टर्ड कागजात केवल सौ प्रतियाँ छापकर जीवित रहते हैं। यह पार्टी की नीति है जिसके शासन की प्रशंसा और प्रचार की जरूरत है। पति संपादक, पत्नी प्रबंधक, पुत्र वरिष्ठ संवाददाता और बेटी विज्ञापन प्रबंधक इस तरह के पत्र मीडिया की गरिमा को गिरा देते हैं;

इंटरनेट और मोबाइल मेल ने फेसबुक और ट्विटर को मजबूत सामाजिक मंच बना दिया है जहां लोग अपने विचार साझा कर सकते हैं। यह दूसरों से टकराती है क्योंकि यह दोधारी है। ट्विटर पर की गई टिप्पणियों के कारण भारत के पूर्व विदेश मंत्री शशि थरूर और क्रिकेट व्यापारी ललित मोदी को पद छोड़ना पड़ा। मीडिया एक जीवंत संस्था है। इसने अपना रंग और रूप कई बार बदला है। एक समय था जब उत्तर से दक्षिण तक खबरों को छह महीने लगते थे।रही है। लेकिन आज छह सेकंड में यह शब्द पूरी दुनिया में फैल गया। इस वृद्धि से लोकतंत्र और जन जागरूकता के प्रति इसकी ज़िम्मेदारी भी बढ़ी है; लेकिन इसे ठीक से पूरा नहीं किया जा रहा है। अपराधी पूरा समाज और राजनीतिक वातावरण है, न सिर्फ मीडिया।

हर चुनाव में लाखों नए मतदाता शामिल होते हैं। उन्हें प्रशिक्षण चाहिए क्योंकि वे नए हैं। युवा पीढ़ी विचारशील है। इसलिए मीडिया इस क्षेत्र में बहुत कुछ कर सकता है। यह नए लोगों को जाति, क्षेत्र, भाषा और प्रांत की राजनीति से मुक्त करने के लिए प्रेरित कर सकता है और वंशवादी, भ्रष्ट और आपराधिक उम्मीदवारों का विरोध करने के लिए प्रेरित कर सकता है; लेकिन मीडिया इस बारे में अक्सर चुप रहता है। विज्ञापन कहीं उम्मीदवार को डराते हैं तो कहीं नहीं। नतीजतन, वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करते समय प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के जाति और धार्मिक समीकरणों को भी ध्यान में रखता है। यह सामाजिक सुधार के बजाय जाति और धार्मिक राजनीति को बढ़ाता है। यही कारण है कि छह दशक बाद भी भारतीय लोकतंत्र जनता की उम्मीदों को पूरा नहीं कर पा रहा है।

कच्चे माल और मशीनों की गुणवत्ता किसी भी वस्तु के उत्पादन में बहुत महत्वपूर्ण है। यह मीडिया की हालत है। इस समाज से भी पत्रकार आ रहे हैं। राजनीतिक चमक और भौतिक संघर्ष भी उन पर प्रभाव डालते हैं। उन्हें अपने परिवार के लिए कार, घर, मनोरंजन, अच्छी शिक्षा और अन्य सुविधाओं की भी आवश्यकता है। अब खाली पेट साइकिल चलाना पत्रकारिता नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में वे मर जाएंगे। हाल ही में राडिया-राजा प्रकरण से पता चला कि पत्रकारिता जगत में कई महत्वपूर्ण लोगों ने अपमानित किया है।

यह आश्चर्यजनक है कि भ्रष्टाचार समाज में इतना व्यापक, शक्तिशाली और स्वीकार्य हो गया है। राजनीति पहले सफेद थी; लेकिन अब न्यायपालिका और सेना में भ्रष्टाचार की कहानियां भी सामने आ रही हैं। ऐसे में किसी को मीडियाकर्मियों से बहुत अधिक उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। सेना और न्यायपालिका के भ्रष्टाचार को मीडिया ने भी उजागर किया है। इसलिए, यह उनकी सर्वोच्च दायित्व है।

लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि मीडिया भी समाज का एक हिस्सा है। लोकतंत्र और लोकतंत्र की कसौटी पर खरा उतरने से पहले समाज और उसके नेताओं को खुद को परखना होगा। ईमानदार पत्रकारों के लिए अनुशासनहीन समाज, भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था और पैसे कमाने की मशीन बनाने वाली अनैतिक शिक्षा सब व्यर्थ हैं।

आज मीडिया पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख मुद्दे:

भारत में फर्जी खबरों की समस्या है, जो लोगों को गलत जानकारी देती है और अफवाह और भ्रम फैलाती है।

कभी-कभी यह गैरकानूनी रिपोर्टिंग में भी शामिल हो जाता है, जो देश की सुरक्षा को खतरा बना सकता है। उदाहरण के लिए, मुंबई में 26/11 के आतंकवादी हमले के मामले में गैर जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग करना और भीड़ को भड़काकर कानून-व्यवस्था को बाधित करना।

मीडिया उच्च टीआरपी प्रतियोगिता में सनसनीखेज समाचार प्रसारित करता है, इससे सार्वजनिक मुद्दों से संबंधित समाचारों का महत्व कम हो जाता है।

- मीडिया में पेड न्यूज, जो लोगों को भ्रमित करता है, भी एक समस्या है।
- भारत में मीडिया ट्रायल की घटनाओं की वृद्धि ने न्याय का अपमान किया है।
- भारत में मीडिया की विविधता और गुणवत्ता समावेश और लाभ-संचालित हितों से प्रभावित हो रही है।
- इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, भारत में मीडिया को सशक्त बनाने के लिए निम्नलिखित कार्रवाई करना समय लेगा।
- मोटे तौर पर कानून बनाकर पेड न्यूज़ को नियंत्रित करना चाहिए।
- प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टर्फ युद्ध से बचने के लिए एकमात्र नियंत्रण होना चाहिए।
- कानून भारतीय प्रेस परिषद को दंडात्मक अधिकार देना चाहिए।
- समाचार प्रसारण मानक प्राधिकरण सशक्त होना चाहिए।
- पत्रकारों पर हमलों के मामले में त्वरित कार्रवाई की जानी चाहिए।

निष्कर्ष :

नियमों के बिना मीडिया भारत में लोकतंत्र को अपमानजनक बना सकता है, हालांकि मीडिया लोकतंत्र का चैथा स्तंभ है। संविधान के भीतर उचित स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। समाज में मीडिया भी है। लोकतंत्र और लोकतंत्र की कसौटी पर खरा उतरने से पहले समाज और उसके नेताओं को खुद को परखना होगा। भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था, अनैतिक शिक्षा, जो धन बनाने का साधन है, और अनुशासनहीन समाज से ईमानदार पत्रकारों की खोज असफल होगी। दुनिया में तेजी से विकसित होने वाली प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया में आज के युवा अधिक उत्साहित हैं। इसलिए, टीआरपी चैनलों को बढ़ावा देने के लिए मीडिया को सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची:

1. अंसारी एम./महिला और मानव अधिकार

2. पांडे डा. जयनारायण/भारत का संविधान

3. नवभारत टाइम्स, 2013

4. 2014 की रोजगार एजेंसी

5. विश्व संवाद केंद्र के निदेशक विजय कुमार, सुदर्शन कुंज, सुमन नगर, धर्मपुर, देहरादून।

6. प्रभासक्षी समाचार नेटवर्क, 2014

7. प्रारूप और शिल्प, डा. मनोहर प्रभाकर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

8. प्रबंधन समाचार पत्र, गुलाब कोठारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

9. राज्य सरकार और जनसंपर्क, कालीदत्त झा, रघुनाथ प्रसाद तिवारी और डॉ. महेंद्र मधुप द्वारा प्रकाशित, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

10. काशीनाथ गोविंदराव जोगलेकर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली की पत्रकारिता, संवाद समिति।

11. मिशन से मीडिया तक पत्रकारिता, अखिलेश मिश्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

12. सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र, लेखक रवींद्र शुक्ल, प्रकाशित राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

13. दैनिक भास्कर का जयपुर संस्करण, 25 दिसंबर 2013

14 नवंबर 2013 को राजस्थान पत्रिका में गुलाब चंद कोठारी ने एक संपादकीय लेख लिखा था।